मौखिक :

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (एक-दो पंक्तियों में) दीजिए :

प्रश्न 1. किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें क्या पता चलता है?

उत्तर— किसी व्यक्ति की पोशाक से उसकी श्रेणी अथवा समाज में उसका रुतबा निर्धारित होता है। पोशाक यह बताने में सक्षम होती है कि कोई व्यक्ति निम्न वर्ग का है या उच्च वर्ग का, धनी है अथवा निर्धन। पोशाक ही प्राय: समाज में मनुष्य का दर्जा निश्चित करती है।

प्रश्न 2. खरबूज़े बेचने वाली स्त्री से कोई खरबूज़े क्यों नहीं खरीद रहा था?

उत्तर— खरबूज़े बेचने वाली स्त्री अधेड़ उम्र की थी जो खरबूजे फुटपाथ पर रखकर स्वयं फफक-फफक कर रो रही थी। उसके रोने के कारण कोई उससे खरबूज़े नहीं खरीद रहा था ।

प्रश्न 3. उस स्त्री को देखकर लेखक को कैसा लगा?

उत्तर— उस खरबूज़े बेचने वाली स्त्री को रोते देखकर लेखक का मन व्यथा से भर गया। उसका मन चाहा कि वह उसके पास बैठकर उसके दु:ख का कारण जान सके किंतु उसकी पोशाक ने उसे ऐसा करने न दिया।

प्रश्न 4. उस स्त्री के लड़के की मृत्यु का कारण क्या था?

उत्तर— उस स्त्री का बेटा सुबह मुँह-अँधेरे खरबूज़े चुनने जाता था। एक दिन पहले जब उसका बेटा खरबूज़े चुन रहा था तब गीली मेड़ की तरावट में विश्राम करते हुए, एक साँप पर उसका पैर पड़ गया और साँप के डसने से उस स्त्री के बेटे की मृत्यु हो गई।

प्रश्न 5. बुढ़िया को कोई भी उधार क्यों नहीं देता?

उत्तर— बुढ़िया का बेटा कछियारी (खेतों में तरकारी बोकर) करके कुछ पैसे कमा लेता था किंतु उसकी मृत्यु हो जाने पर बुढ़िया की आय का कोई साधन न रहा, ऐसे में कोई उसे उधार कैसे देता?

लिखित :

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (लगभग 25-30 शब्दों में) लिखिए :

प्रश्न 1. मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्त्व है?

अथवा

लेखक ने समाज में पोशाक का क्या महत्त्व बताया है?

अथवा

आपके विचार से पोशाक जीवन में क्या महत्त्व रखती है?

उत्तर— मनुष्य के सामाजिक जीवन में पोशाक अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मनुष्यों की पोशाकें उन्हें विभिन्न श्रेणियों में बाँट देती हैं। पोशाक समाज में उसका दर्जा निश्चित करती है। समाज में अनेक बंद दरवाज़े पोशाक के कारण ही खुल जाते है। अत: जितनी कीमती पोशाक हम पहनते हैं समाज में हमारा स्थान भी उतना ही ऊँचा समझा जाता है।

प्रश्न 2. पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है?

अथवा

क्या आप इस बात से सहमत हैं कि पोशाक हमारे लिए बंधन और अड़चन बनती है?

अथवा

खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुकने से रोकती है। क्यों?

उत्तर— करुणा और दया से भरकर जब हम निम्न श्रेणी के किसी व्यक्ति के प्रति अपनी भावनाएँ व्यक्त करना चाहते हैं, उनके दुख में शोकाकुल होकर उन्हें अपनी सहानुभूति देना चाहते हैं तब उच्चवर्गीय पोशाक हमें ऐसा करने से रोकती है और मार्ग में अड़चन पैदा करती है। ऐसे समय में पोशाक हमारे लिए बंधन और अड़चन बनती है।

प्रश्न 3. लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया?

उत्तर— लेखक उस स्त्री के रोने का कारण इसलिए नहीं जान पाया क्योंकि खरबूज़े बेचने आई वह स्त्री कपड़े से मुँह छिपाए सिर को घुटनों पर रखकर पुत्र वियोग के कारण फफक-फफककर रो रही थी। दूसरी ओर लेखक की पोशाक भी दुख का कारण जानने के मार्ग में अड़चन बन रही थी।

प्रश्न 4. भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था?

अथवा

अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए भगवाना क्या करता था?

उत्तर— शहर के पास डेढ़ बीघा जमीन में कछियारी करके भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कर रहा था। खरबूज़ों की डलिया बाज़ार में पहुँचाकर कभी वह स्वयं सौदे के पास बैठ जाता था तो कभी उसकी माँ बैठ जाती थी। इस प्रकार परिश्रम करके वह अपने परिवार का निर्वाह करता था।

प्रश्न 5. लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूज़े बेचने क्यों चल पड़ी?

अथवा

लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया का खरबूज़े बेचना कहाँ तक उचित था? तर्क सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— सामाजिक और आर्थिक रूप से मनुष्य चाहे कितना ही निर्धन क्यों न हो परिवार में किसी की भी मृत्यु उसे शोक से भर देती है। हर व्यक्ति चाहता है, प्रियजनों की मृत्यु पर रोना, शोक मनाना। किंतु विडंबना यह है कि दुखी होने का भी एक अधिकार होता है, जो गरीबों को शायद ईश्वर ने नहीं दिया। पुत्र की मृत्यु होने पर घर का सब कुछ दान-दक्षिणा में चुक गया, सुबह होते ही बच्चे भूख से बिलबिलाने लगे, बहू बुखार से तप रही थी। खाने के लिए और इलाज के लिए घर में पैसे नहीं थे। विवश होकर, पुत्र की मृत्यु के दूसरे ही दिन उसे खरबूजे बेचने जाना पड़ा।

प्रश्न 6. बुढ़िया के दुख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई?

अथवा

'दु:ख का अधिकार' कहानी में लेखक को बुढ़िया के दु:ख के बारे में जानकर किसकी याद आई और क्यों?

अथवा

पुत्र वियोगिनी बुढ़िया माँ और संभ्रांत महिला के दुख का तुलनात्मक वर्णन कीजिए।

उत्तर— बुढ़िया के दुख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद इसलिए हो आई क्योंकि जब उसके बेटे की मृत्यु हुई थी तब ढाई मास तक वह पलंग से उठ न सकी थी। पंद्रह-पंद्रह मिनट में उसे मूर्छा आ जाती थी। आँखों से आँसू बहते रहते थे, सारा शहर उसके दुख से दुखी था। दूसरी ओर उस गरीब स्त्री को दुख मनाने का अधिकार तक न था, सहूलियत भी न थी। उसे अपने पोता-पोती के लिए भोजन और बीमार बहू के लिए दवाई का प्रबंध करने के लिए अपने बेटे की मृत्यु के अगले दिन ही बाज़ार में खरबूजे बेचने आना पड़ा। लोग उससे घृणा कर रहे थे, उसके दुख से दुखी न थे।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए :

प्रश्न 1. बाज़ार के लोग खरबूज़े बेचने वाली स्त्री के बारे में क्या-क्या कह रहे थे? अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

गरीब बुढ़िया माँ को लोग ताने क्यों दे रहे थे?

अथवा

वृद्धा का बाज़ार में खरबूजे बेचना वहाँ खड़े लोगों को बेहयाई क्यों लगी?

अथवा

बुढ़िया के किस काम को अन्य लोग अपराध बता रहे थे व क्यों?

उत्तर— बाज़ार के लोग खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री के बारे में तरह-तरह की बातें कर रहे थे। खरबूज़े बेचने वाली स्त्री के बारे में बाज़ार के लोगों की बातें घृणा से भरी थीं। एक ने उसे बेहया कहा क्योंकि वह दुकान लगाने के लिए एक दिन का इंतज़ार भी न कर सकी। दूसरे को समाज के धर्म-ईमान की चिंता थी, क्योंकि वह सूतक खत्म होने से पहले ही खरबूज़े बेचने आ गई थी। और एक ने तो उसकी नीयत को ही शक की निगाह से देखा।

प्रश्न 2. पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला?

उत्तर— उस स्त्री के रोने का कारण जानने के लिए लेखक ने पास-पड़ोस की दुकानों से पूछा तो उसे पता चला कि उस स्त्री का 23 साल का बेटा कल साँप के काटने से चल बसा। उसकी बहू और पोता-पोती हैं। शहर के पास डेढ़ बीघा ज़मीन में वह कछियारी करके अपने परिवार का निर्वाह करता था, उसकी मृत्यु से परिवार असहाय हो गया था।

प्रश्न 3. लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या-क्या उपाय किए?

उत्तर— साँप द्वारा काट लिए जाने पर बुढ़िया माँ बावली हो गई और ओझा को बुला लाई। ओझा ने झाड़-फूँक की, नागदेव की पूजा की। घर में जो कुछ भी था वह सब दान-दक्षिणा में दे दिया। माँ, बहू और बच्चे भगवाना से लिपट-लिपटकर रोए

फिर भी वह गरीब अपने बेटे को न बचा सकी।

प्रश्न 4. लेखक ने बुढ़िया के दुख का अंदाज़ा कैसे लगाया?

उत्तर— लेखक ने जब देखा कि खरबूज़े बेचने आई बुढ़िया कपड़े से मुँह छिपाए सिर को घुटनों पर रखकर फफक-फफक कर रो रही है तो आस-पास की दुकानों से पूछने पर पता चला कि पुत्र-वियोग के कारण वह दुखी है। उसके दुख का अंदाजा लगाने के लिए वह अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला के विषय में सोचने लगा जो पुत्र वियोग में ढाई महीने उठ न सकी थी, हर दम रोती रहती थी, उसके इलाज के लिए दो डॉक्टर हमेशा सिरहाने बैठे रहते थे।

प्रश्न 5. इस पाठ का शीर्षक 'दु:ख का अधिकार' कहाँ तक सार्थक है? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'दुख का अधिकार' शीर्षक कितना सार्थक है— इस विषय में अपने विचार लिखिए।

उत्तर— किसी भी रचना का शीर्षक उसकी मुख्य घटना, स्थान अथवा मुख्य पात्र पर आधारित होता है। प्रस्तुत कहानी एक भावानात्मक कहानी है और इसका शीर्षक घटना पर आधारित है। कहानी की मुख्य पात्र बुढ़िया, जिसके पुत्र की मृत्यु साँप के काटने से हो गई थी वह कमज़ोर आर्थिक स्थिति के कारण अपने पुत्र के मरने का दुख भी मना न सकी, उसे अपने पुत्र की मृत्यु के अगले ही दिन बाज़ार में खरबूजे बेचने जाना पड़ा क्योंकि उसके पोता-पोती भूखे थे, बहू बीमार थी। इस तरह उस अभागी को अपने बेटे की मृत्यु का दुख मनाने का भी अधिकार नहीं था। अत: यह शीर्षक अपनी कथावस्तु के अनुसार पूर्णत: सार्थक है।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए :

1. जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को ..... रोके रहती है।

उत्तर— इन पंक्तियों में लेखक ने पतंग का सादृश्य लेकर यह सिद्ध किया है कि जिस प्रकार कटी हुई पतंग एकदम से भूमि पर नहीं गिर जाती, वह कुछ समय तक हवा में ही तैरती रहती है, उसी तरह हमारी पोशाक हमारी मनोवृत्तियों को परिचालित करती है। वह हमें एकदम से झुकने से रोकती है। उच्चवर्गीय अहं भाव कटी पतंग की तरह कहीं न कहीं सुरक्षित रहता है।

2. इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।

उत्तर— यह वाक्य समाज के उस वर्ग की सोच, विचारधारा को व्यक्त करता है जो दूसरों के दुख-दर्द को, मज़बूरियों को नहीं समझता, वह केवल दूसरों के बारे में बातें करना, व्यंग्य करना जानता है। अपने परिवार की भोजन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए एक बूढ़ी दादी पुत्र की मृत्यु के अगले दिन खरबूज़े बेचने आती है, तो समाज के लोग उस पर स्वार्थी होने का आक्षेप लगाते हैं। उसकी आँखों के न रुकने वाले आँसू कोई नही देखता, लोगों को दिखाई देता है तो केवल उसका खरबूजे बेचना।

3. शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए ..... दुखी होने का भी एक अधिकार होता है।

अथवा

शोक मनाने, गम मनाने के लिए प्रयुक्त 'सहूलियत' शब्द की विषमता को पाठ के आधर पर समझाइए।

उत्तर— इस कथन के द्वारा लेखक यह स्पष्ट करना चाहता है कि दुख में दुखी होना भी गरीबों के नसीब में नहीं होता। शायद इसके लिए भी सहूलियत और अधिकार चाहिए जो केवल पूँजीपति वर्ग के पास सुरक्षित है।

भाषा अध्ययन :

(1) निम्नांकित शब्द समूहों को पढ़ो और समझो : (विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक से देखकर अध्ययन करें)

(2) निम्नलिखित शब्दों के पर्याय लिखिए :

ईमान-नीयत	दर्ज़ा-रुतबा,स्तर	ग़म-दुख	बदन-शरीर	ज़मीन-पृथ्वी
बेचैनी-व्याकुलता	अंदाज़ा-अनुमान	ज़माना-संसार	बरकत-लाभ	

(3) निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार पाठ में आए शब्द-युग्मों को छाँटकर लिखिए :

उदाहरण-बेटा-बेटी	खसम-लुगाई	धर्म-ईमान	पोता-पोती	दान-दक्षिणा
	झाड़ना-फूँकना	छन्नी-ककना	दुअन्नी-चवन्नी	

(4) पाठ के संदर्भ के अनुसार निम्नलिखित वाक्यांशों की व्याख्या कीजिए :

बंद दरवाज़े खोल देना — सभी मार्ग खुल जाना। **निर्वाह करना** — गुज़ारा चलाना।

भूख से बिलबिलाना — अत्यधिक भूख से रोना। **कोई चारा न होना** — कोई उपाय न होना।

शोक से द्रवित हो जाना — दुख से दुखित हो जाना।

(5) निम्नलिखित शब्द-युग्मों और शब्द-समूहों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(क) छन्नी-ककना — गरीब स्त्री को छन्नी-ककना भी नसीब नहीं होता।

अढ़ाई-मास — वह अढ़ाई मास से घर नहीं आया।

पास-पड़ोस — पास-पड़ोस का अच्छा होना जरूरी है।

दुअन्नी-चवन्नी — उसके पास दुअन्नी-चवन्नी तक नहीं है।

मुँह-अँधेरे — मैं मुँह-अँधेरे सैर करने जाता हूँ।

झाड़ना-फूँकना — शहरी लोग झाड़ने-फूँकने में विश्वास नहीं करते।

(ख) फफक-फफककर — पैसे चोरी हो जाने पर वह फफक-फफककर रोने लगा।

बिलख-बिलखकर — बिलख-बिलखकर रोने से वह वापिस नहीं आएगा।

तड़प-तड़पकर — घायल व्यक्ति ने तड़प-तड़पकर अपनी जान दे दी।

लिपट-लिपटकर — बच्चा माँ से लिपट-लिपटकर रो रहा था।

परीक्षोपयोगी अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

निबंधात्मक प्रश्न :

प्रश्न 1. भगवाना को साँप द्वारा डस लेने पर बुढ़िया के घर की क्या दशा हो गई?

अथवा

लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या-क्या उपाय किए?

उत्तर- भगवाना को जब साँप ने डस लिया तब बुढ़िया पागल-सी होकर अपने पुत्र को बचाने के अनेक उपाय करने लगी। उसने झाड़-फूँक करवाई, नागदेव की पूजा हुई और दान-दक्षिणा भी दी पर वह अपने पुत्र को न बचा सकी। उसके घर में जो कुछ भी था वह दान में समाप्त हो गया। बहू और बच्चे दुख में डूब गए। बेटे के संस्कार के लिए उसे अपने हाथों के छन्नी-ककना (मामूली गहने जेवरात) तक बेचने पड़े। सुबह होते-होते बच्चे भूख से बिलखने लगे और बहू बुखार से तपने लगी। ऐसी दशा में उसे कोई उधार भी न देता। घर की आर्थिक दशा दयनीय हो गई।

प्रश्न 2. बुढ़िया का दु:ख और संभ्रांत महिला का दुख, दोनों में से किसके दु:ख ने लेखक को अधिक द्रवित किया और क्यों?

उत्तर— लेखक को बुढ़िया के दुख ने अधिक द्रवित किया। उस बुढ़िया को अपने जवान बेटे की मृत्यु के अगले ही दिन मजबूर होकर बाज़ार में खरबूजे बेचने के लिए आना पड़ा क्योंकि उसकी बहू को तेज़ बुखार था और उसके पास उसका इलाज कराने के लिए पैसे नहीं थे। इसके अलावा लोगों को उस बुढ़िया से कोई सहानुभूति नहीं थी। लोग उसके बाज़ार में आने पर तरह-तरह की बातें कर रहे थे, उसे बुरा-भला कह रहे थे। लेखक उस बुढ़िया की इस दयनीय स्थिति से द्रवित हो उठा।

प्रश्न 3. 'दु:ख का अधिकार' कहानी हमारे समाज में गरीब लोगों की मानसिक व आर्थिक स्थिति को उजागर करती है— स्पष्ट करें।

उत्तर— 'दु:ख का अधिकार' कहानी हमारे समाज में गरीब लोगों की मानसिक व आर्थिक स्थिति को उजागर करती है कि गरीब लोग डॉक्टरी इलाज की अपेक्षा झाड़-फूँक, पूजा-पाठ में अधिक विश्वास करते हैं। कहानी में बेटे को साँप के डसने पर बुढ़िया किसी डॉक्टर को नहीं ओझा को बुला लाती है। ओझा झाड़-फूँक करता है, नागदेव की पूजा करता है, और दान-दक्षिणा में घर का आटा-अनाज सब चला गया पर भगवाना (बुढ़िया का बेटा) नहीं बचता।

इस कहानी में गरीबों की आर्थिक स्थिति के बारे में भी बताया गया है कि वे रोज़ कमा कर खाते हैं, उनके पास जमा पूँजी नहीं होती इसलिए वे विपत्ति का सामना करने में असहाय होते हैं। भगवाना के मरने पर उसकी बुढ़िया माँ को उसके कफ़न का प्रबंध करने के लिए छन्नी-ककना बेचने पड़े और बीमार बहू के इलाज का प्रबंध करने के लिए बेटे की मृत्यु के अगले ही दिन बाज़ार में खरबूजे बेचने के लिए जाना पड़ा। इस तरह कहानी में गरीब लोगों की दकियानूसी मानसिक स्थिति व दयनीय आर्थिक स्थिति को उजागर किया गया है।

प्रश्न 4. 'दु:ख का अधिकार' कहानी में समाज की किन कुरीतियों को उजागर किया गया है?

उत्तर— 'दु:ख का अधिकार' कहानी में समाज की जिस मुख्य कुरीति को उजागर किया गया है वह है— लोगों का भावशून्य होना। लोगों को किसी गरीब के दुख-दर्द से कुछ लेना-देना नहीं होता, कोई सहानुभूति नहीं होती वे तो केवल

बातें बनाना जानते हैं जैसे पाठ में बाज़ार के लोग गरीब बुढ़िया के बेटे की मृत्यु के अगले ही दिन बाज़ार में खरबूजे बेचने पर बातें करते हैं। उसे बेहया, बदनीयत वाली और ईमान-धर्म की चिंता न करने वाली कहते हैं। वे यह नहीं समझते कि उसे ऐसा क्यों करना पड़ रहा है। कहानी में इस कुरीति को भी उजागर किया गया है कि आज भी गरीब लोग ओझाओं के चक्कर में पड़े हैं, वे डॉक्टरी इलाज नहीं करवाते जैसे भगवाना की माँ ने किया और बेटा गँवा बैठी। यदि वह किसी डॉक्टर को बुला लाती तो शायद भगवाना बच जाता। कहानी में इस कुरीति को भी उजागर किया गया है कि लोग व्यर्थ के रीति-रिवाजों में फँसे रहते हैं जैसे एक तो बुढ़िया के घर की आर्थिक हालत अच्छी नहीं थी दूसरा उसकी बहू बुखार से तप रही थी, पोते भूख से बिलबिला रहे थे, घर में खाना, पैसे कुछ न था और वह इस सबके बावजूद नया कफ़न खरीदने के लिए अपने हाथ का छन्नी-ककना बेच देती है। वह भगवाना के मृत शरीर पर कोई पुराना वस्त्र भी डाल सकती थी पर व्यर्थ के रीति-रिवाज़ों के कारण वह ऐसा नहीं करती।

प्रश्न 5. 'दुख मनाने का भी एक अधिकार होता है।' टिप्पणी कीजिए।

उत्तर— 'दुख का अधिकार' कहानी पढ़कर तो यही लगता है कि दुख मनाने का भी एक अधिकार होता है जो शायद गरीबों को नहीं होता तभी तो जब एक संभ्रांत महिला के पुत्र की मृत्यु होती है तो वह अढ़ाई मास तक पलंग से नहीं उठती, पुत्र-वियोग में वह बार-बार मूर्छित हो जाती थी और होश आने पर आँसू बहाती रहती थी जबकि गरीब बुढ़िया को जवान बेटे की मृत्यु के अगले ही दिन बाज़ार में खरबूजे बेचने के लिए आना पड़ता है क्योंकि उसकी बहू को तेज़ बुखार था और उसके पास उसका इलाज कराने के लिए कुछ न था। वह बेचारी अपने बेटे की मृत्यु का दुख भी ठीक से मना नहीं पाती। ऐसा लगता है जैसे उसे अपने बेटे की मृत्यु का दुख मनाने का अधिकार भी नहीं है।

प्रश्न 6. बाज़ार में खड़े लोगों के मन में वृद्धा के प्रति उपजी घृणा पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट कीजिए।

उत्तर— बाज़ार में खड़े लोगों के मन में वृद्धा के प्रति उपजी घृणा गलत थी। लोगों को उस वृद्धा के दुख-दर्द को, उसकी मजबूरी को, उसके हालात को समझना चाहिए। उन्हें वृद्धा से सहानुभूति प्रकट करनी चाहिए थी कि उसके जवान बेटे की मृत्यु हो गई थी और उसे अपने परिवार वालों अर्थात अपनी बहू, पोतों के लिए मज़बूर होकर बाज़ार में खरबूजे बेचने आना पड़ा। लोगों को बुढ़िया की मदद करनी चाहिए थी पर वे यह सब करने के बजाए उसके बारे में तरह-तरह की बातें कर रहे थे, वे उसे बेहया, बदनीयत वाली कह रहे थे। उनका ऐसा कहना यह स्पष्ट करता है कि वे कितने भावशून्य, संवेदना शून्य हैं।

प्रश्न 7. 'जिंदा आदमी नंगा भी रह सकता है, परंतु मुर्दे को नंगा कैसे विदा किया जाए'? आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— यह हमारे भारतीय समाज की विडंबना है कि हम व्यर्थ के रीति-रिवाज़ों के चक्कर में पड़े रहते हैं। हमारे भारतीय समाज की यह रीति है कि एक मुर्दे पर कफ़न के रूप में नया वस्त्र डाला जाता है चाहे घर की आर्थिक हालत कितनी ही कमज़ोर हो, चाहे कर्ज ही लेना पड़े पर कफ़न नया डाला जाता है। लेखक कहता है कि एक गरीब व्यक्ति गरीबी के कारण नंगा रह सकता है लेकिन मरने के बाद उसे नंगा विदा नहीं किया जाता, उस पर वस्त्र डालकर उसे विदा किया जाता है और वह भी नया वस्त्र। वाह रे! परंपरा! चाहे ज़िंदा इनसान को तन ढकने के लिए वस्त्र नसीब न हुआ हो पर मरने पर वह नए वस्त्र पहन कर इस दुनिया से विदा होता है। तभी तो दयनीय आर्थिक स्थिति के बावजूद मृत भगवाना की माँ उसके लिए नया कफ़न खरीदती है चाहे इसके लिए उसे अपने हाथ के छन्नी-ककना बेचने पड़ते हैं।

प्रश्न 8. कहानी 'दु:ख का अधिकार' समाज में गरीबों के प्रति अमीर वर्ग की संवेदनहीनता की पोल खोलती है। टिप्पणी लिखिए।

उत्तर— गरीब बुढ़िया अपने जवान बेटे की मृत्यु के अगले ही दिन बाज़ार में खरबूजे बेचने के लिए चली जाती है क्योंकि घर में उसके पोते भूख से बिलबिला रहे थे और बहू बुखार से तप रही थी। बीमार बहू की दवाई का प्रबंध करने के लिए उसे बाज़ार में खरबूजे बेचने के लिए जाना पड़ा और बाज़ार में खड़े लोग उसके साथ सहानुभूति प्रकट करने के बजाए उसके बारे में तरह-तरह की बातें करने लगे। उसे बेहया, बदनीयत वाली, पैसे पर मरने वाली आदि कह रहे थे। किसी ने उसके ऐसा करने का कारण जानने की कोशिश नहीं की, वे सब तो उसके बारे में तरह-तरह की बातें कर रहे थे। इस तरह यह कहानी गरीबों के प्रति अमीरों की संवेदनहीनता की पोल खोलती है।

प्रश्न 9. 'भगवाना के समान बहुत से लोग अंधविश्वास के चलते मौत के मुँह में चले जाते हैं।' इस कथन को ध्यान में रखते हुए अंधविश्वास को दूर करने के कुछ सुझाव दीजिए।

उत्तर— जब भगवाना को साँप ने डस लिया तो उसकी माँ ओझा को बुला लाई। ओझा ने झाड़-फूँक की, नागदेव की पूजा की, घर में जो कुछ आटा और अनाज था वह सब दान-दक्षिणा में उठ गया। इस सबके बावजूद भगवाना बच नहीं

पाया, उसकी मृत्यु हो गई। यदि भगवाना की माँ ओझा को बुलाने के बजाय डॉक्टर को बुला लाती तो शायद भगवाना बच जाता। अत: हमें ऐसे अंधविश्वासों से दूर रहना चाहिए। हमें किसी बीमारी का इलाज डॉक्टर या वैद्य से कराना चाहिए न कि ओझाओं से कराना चाहिए।

प्रश्न10. 'दु:ख का अधिकार' में धनी और निर्धन वर्ग के अंतर को बताने वाली घटनाओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर— जब एक संभ्रांत महिला के पुत्र की मृत्यु हुई तो वह महिला पुत्र-वियोग से अढ़ाई मास तक पलंग से उठ नहीं पाई। वह बार-बार मूर्छित हो जाती थी और होश आने पर आँसू बहाती रहती थी। दो-दो डॉक्टर हमेशा उसके सिरहाने बैठे रहते थे। सारे शहर के लोग उसके दुख से द्रवित हो उठे थे। दूसरी ओर गरीब बुढ़िया को मजबूरी में अपने बेटे की मृत्यु के अगले ही दिन बाज़ार में खरबूजे बेचने के लिए जाना पड़ा क्योंकि उसकी बहू बुखार से तप रही थी और उसके पास अपनी बीमार बहू का इलाज कराने के लिए पैसे नहीं थे। बाज़ार में खड़े लोगों को उसके साथ कोई सहानुभूति नहीं थी, वे तो उसके बारे में तरह-तरह की बातें कर रहे थे। वे उसे बेहया, बदनीयत, धर्म-ईमान को न मानने वाली कह रहे थे।

ये दो घटनाएँ धनी और निर्धन का अंतर स्पष्ट करती हैं।

प्रश्न11. पाठ के आधार पर बताइए कि शोक के समय धनी और निर्धन की दशा में क्या अंतर होता है।

अथवा

पुत्र वियोगिनी निर्धन बुढ़िया माँ और संभ्रांत महिला के दुख का तुलनात्मक वर्णन कीजिए।

अथवा

निर्धन वृद्धा व संभ्रांत महिला का दु:ख समान होते हुए भी भिन्न कैसे था?

अथवा

'दु:ख का अधिकार' पाठ में लेखक ने संभ्रांत महिला की चर्चा क्यों की है?

अथवा

'दुखी होने का भी एक अधिकार होता है' लेखक ने यह शब्द किस आधार पर कहे हैं, उल्लेख कीजिए।

उत्तर- शोक के समय यदि हम मनुष्य की मानसिक दशा की ओर ध्यान दें, तो पाएँगे कि शोक तो दोनों को बराबर होता है पर अभावग्रस्त लोगों का दुख कुछ अधिक ही गहरा होता है। किंतु दोनों के दुख मनाने के ढंग और अधिकार में नितांत अंतर होता है। एक ओर तो संभ्रांत महिला पुत्र-वियोग में ढाई महीने बिस्तर से नहीं उठ पाती, दो डॉक्टर उसकी देखभाल करते रहते हैं, पूरा शहर उसके शोक से संतप्त है जबकि दूसरी ओर गरीब बुढ़िया अपने पुत्र की मृत्यु के दूसरे ही दिन सौदा बेचने को विवश हो जाती है, लोग उसके दुख में दुखी तो नहीं पर उसका उपहास अवश्य करते हैं। उसे न रोने के लिए अवकाश है, न ही सहूलियत। दुख का अधिकार भी धनियों के पास सुरक्षित है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न :

प्रश्न 1. बुढ़िया के परिवार में कौन-कौन था और उनका गुज़ारा कैसे चलता था?

उत्तर— बुढ़िया के परिवार में उसका बेटा, बहू और बच्चे थे। बुढ़िया का बेटा शहर के पास डेढ़ बीघा ज़मीन में कछियारी करके परिवार का गुज़ारा करता था।

प्रश्न 2. वृद्धा को अपने छन्नी-ककना क्यों बेचने पड़े?

उत्तर— वृद्धा को अपने मृत बेटे के क़फन खरीदने के लिए छन्नी-ककना बेचने पड़े।

प्रश्न 3. बुढ़िया के रोने का क्या कारण था?

उत्तर- बुढ़िया का पुत्र मुँह-अँधेरे, खेत में बेलों से पके खरबूज़े तोड़ रहा था। तब उसका पैर साँप पर पड़ गया और उसके काटने से उसके पुत्र की मृत्यु हो गई। जवान पुत्र की मृत्यु ही उसके दुख का कारण था।

प्रश्न 4. पोशाक को लेखक ने किसका प्रतीक माना है?

उत्तर— लेखक के अनुसार पोशाक मनुष्य के जीवन स्तर का प्रतीक है। पोशाक यह निर्धारित करती है कि मनुष्य किस श्रेणी का है। समाज में उसका दर्ज़ा व अधिकार भी पोशाक द्वारा ही निश्चित होता है। पोशाक उसके लिए अनेक बंद दरवाज़े भी खोल देती है।

प्रश्न 5. लेखक ने पतंग का उदाहरण किस संदर्भ में दिया है?

उत्तर- लेखक ने कहा है कि पतंग जब आकाश में ऊँची उड़ती है तब अचानक कट जाने पर वह सहसा पृथ्वी पर गिर

नहीं पड़ती क्योंकि वायु की लहरें उसे संभाले रहती हैं। उसी प्रकार मनुष्य की उच्चवर्गीय पोशाक भी उसे निम्न वर्ग रूपी पृथ्वी पर गिरने नही देती। वह उसे निचली श्रेणियों की अनुभूतियों को समझने से रोके रहती है।

प्रश्न 6. भगवाना की मृत्यु के पश्चात उसके घर की क्या दशा हुई?

अथवा

भगवाना की मृत्यु कैसे हुई? बुढ़िया के घर पर उस मृत्यु का क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर— भगवाना की मृत्यु साँप के डसने से हुई। उसकी मृत्यु के पश्चात उसके घर की बहुत बुरी दशा हुई। उसके बच्चें भूख से बिलबिला रहे थे, उसकी पत्नी बुखार से तप रही थी और घर में उसके इलाज का प्रबंध करने के लिए कुछ नहीं था। कोई उन्हें उधार भी नहीं दे रहा था इसलिए मजबूर होकर भगवाना की बुढ़िया माँ को बाज़ार में खरबूजे बेचने के लिए जाना पड़ा।

प्रश्न 7. परचून की दुकान पर बैठे लाला ने बूढ़ी स्त्री के बारे में क्या कहा?

उत्तर— परचून की दुकान पर बैठे लाला ने बूढ़ी स्त्री के बारे में कहा कि इनके लिए मरे-जिए का कोई मतलब न हो लेकिन इन्हें दूसरे के धर्म-ईमान का तो खयाल करना चाहिए। घर में किसी की मृत्यु होने पर तेरह दिन तक सूतक होता है, उस घर का खाना-पीना नहीं चाहिए और यह बाज़ार में खरबूजे बेचने आ गई है। बाज़ार में हज़ार आदमी आते-जाते हैं। किसी को क्या पता कि इसके घर में सूतक है। यदि किसी ने इसके खरबूजे खा लिए तो उसका धर्म-ईमान नष्ट हो जाएगा।

प्रश्न 8. सूतक क्या होता है, उसका दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

अथवा

'सूतक' से आप क्या समझते हैं? गरीबों के लिए इसके क्या मायने हैं? 'दु:ख का अधिकार' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- किसी के घर में मृत्यु होने पर भारतीय रीति-रिवाज़ के अनुसार उसके घर में तेरह दिन का सूतक होता है जिसमें घर को अपवित्र व अशुद्ध माना जाता है। कोई उनके घर खाता-पीता नहीं है। यदि कोई उनके घर अन्न-जल ग्रहण कर ले तो उसका ईमान-धर्म नष्ट हो जाता है। गरीबों के लिए इसके कोई मायने नहीं हैं क्योंकि उन्हें रीति-रिवाज तक मानने का अधिकार नहीं होता।

प्रश्न 9. लेखक ने खरबूजे बेचने को बुढ़िया का साहस क्यों कहा है?

उत्तर— किसी भी माँ के लिए पुत्र की मृत्यु से बड़ा दुख कोई नहीं होता। बुढ़िया के एकमात्र पुत्र की भी मृत्यु हो गई थी। वह अपने पुत्र की मृत्यु के कारण बहुत दुखी थी परंतु अपनी पुत्रवधू की बीमारी तथा भूख से तड़पते बच्चों के कारण वह अपने दुख को पीछे छोड़कर बाज़ार में खरबूजे बेचने आई थी। लेखक के अनुसार यह बड़े साहस की बात थी क्योंकि एक साधारण स्त्री के लिए ऐसा करना असंभव बात है। परंतु उस बुढ़िया ने परिस्थितियों को देखते हुए साहस का परिचय दिया।

प्रश्न10. 'हाय रे पत्थर दिल!' यहाँ पत्थरदिल का प्रयोग किसके लिए और क्यों किया गया है?

उत्तर— यहाँ खरबूजे बेचने वाली बुढ़िया को पत्थरदिल कहा गया है क्योंकि बुढ़िया का जवान पुत्र एक दिन पहले ही मरा था और वह बाज़ार में खरबूजे बेचने आ गई थी। दरअसल बुढ़िया की पुत्रवधू ज्वर से अचेत पड़ी थी और पोते भूख से बिलबिला रहे थे। इस कारण मज़बूरी वश उसे खरबूजे बेचने के लिए आना पड़ा परंतु बुढ़िया की परिस्थितियों से अंजान लोगों ने उसे पत्थरदिल की संज्ञा दे डाली।

प्रश्न11. फुटपाथ पर खड़े आदमी ने गरीबों के लिए रोटी के क्या मायने बताकर बुढ़िया को धिक्कारा?

उत्तर— फुटपाथ पर खड़े आदमी ने बुढ़िया को धिक्कारते हुए कहा कि इन गरीबों का कोई दीन-धर्म नहीं होता। इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा ही है। इस प्रकार उस व्यक्ति ने बुढ़िया की मज़बूरी को न समझते हुए उस पर स्वार्थी होने का आरोप लगाया।